Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ○

(सूरः ऐराफ़ : 179)

अनुवाद : जिसे अल्लाह हिदायत दे तो वही है जो हिदायत याफताह होता है और जिसे वह गुमराह ठहरा दे तो यही हैं जो नुक़्सान उठाने वाले हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 46

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

# साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 रबीउल सानी 1444 हिज्री कमरी, 17 नबुव्वत 1401 हिज्री शम्सी, 17 नवम्बर 2022 ई.

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

### महिला का जानवर ज़बह करना नुक़्सान से बचाने के लिए वकील का मालिक की संपत्ति में अधिकार

(2304) काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है वह अपने बाप की सम्बन्ध में वर्णन करते थे कि उनकी बकरियां थीं जो सुलआ पहाड़ पर चरा करती थीं। हमारी एक लौंडी ने हमारी बकरियों में से एक बकरी को देखा कि वह मर रही है । उसने एक पत्थर तोड़ा और उससे उसको ज़बह किया। हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हो घर वालों से कहा जब तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मैं पूछ न लूं उसे न खाना। या (कहा) जब तक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ किसी को भेज कर में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पुछवा न लूं, और उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उसके सम्बन्ध में पूछा या किसी को भेज कर पुछवाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके खाने की इजाज़त दी। अबैदुल्लाह कहते थे मुझे यह बात बहुत पसंद आई कि उसने लौंडी हो कर (बकरी को) ज़िबह कर दिया।

(तशरीह) हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबैदीन वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं इस हदीस का ताल्लुक़ हलाल और हराम से नहीं, बल्कि वकालत से है। लौंडी बकरियों वाले की ममलूका थी और इस लिहाज़ से रेवड़ की हिफ़ाज़त उसके सपुर्द थी। उसने हुस्न तसर्रुफ़ (अधिकार) से काम लिया और बकरी को मरते देखा तो ज़िबह कर दिया। अतः यूं करना वकील और मुहाफ़िज़ के लिए जायज़ है और वकील विशेष हालात में ऐसा तसर्रुफ़ करने का मजाज़ है जो नुक़्सान से बचाने वाला हो।

(बुख़ारी, भाग 4 किताबुल वाकालाह, मुद्रित 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः नहल आयत नंबर : 126

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ

# बादशाह भी इस सिलसिला में दाख़िल होंगे और फिर उनके साथ एक दुनिया इस तरफ़ रुजू करेगी

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

### जमाअत के भविष्य के बारे में एक स्वप्न

“मुझे बड़े ही कशफ़ सही से मालूम हुआ है कि बादशाह भी इस सिलसिला में दाख़िल होंगे। यहां तक कि वे बादशाह मुझे दिखाए भी गए हैं। वे घोड़ों पर सवार थे और यह भी अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मैं तुझे यहां तक बरकत दूँगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे।

अल्लाह तआला एक ज़माना के बाद हमारी जमाअत में ऐसे लोगों को दाख़िल करेगा और फिर उनके साथ एक दुनिया इस तरफ़ रुजू करेगी।

सोहबत सालेहीन

क़ुरआन शरीफ़ में आया है قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا (शम्स :10) उसने निजात पाई जिसने अपने नफ़्स का तज़किया किया। तज़किया नफ़्स के वास्ते सोहबत सालेहीन, सालेहीन और नेकों के साथ ताल्लुक़ पैदा करना बहुत मुफ़ीद है। झूठ इत्यादि बुरे आचरण दूर करने चाहिए और जो राह पर चल रहा है उस से रास्ता पूछना चाहिए। अपनी ग़लतियों को साथ-साथ दरुस्त करना चाहिए। जैसा कि गलतियां निकालने के बग़ैर इमला दरुस्त नहीं होती वैसा ही गलतियां निकालने के बग़ैर अख़लाक़ भी दरुस्त नहीं होते। आदमी ऐसा जानवर है कि उसका तज़किया साथ-साथ होता रहे तो सीधी राह पर चलता है अन्यथा बहक जाता है।”

### ख़ौफ़-ए-ख़ुदा

फ़रमाया : “रात के वक़्त जब सब तरफ़ ख़ामोशी होती है और हम अकेले होते हैं, उस वक़्त भी ख़ुदा की याद में दिल डरता रहता है कि वह बेनयाज़ है।”

इन्केसारी

फ़रमाया : “जब इन्सान को कामयाबी हासिल हो जाती है और क्षमा-याचना और मुसीबत की हालत नहीं रहती तो जो शख़्स उस वक़्त इन्केसारी को इख़्तेयार करे और ख़ुदा को याद रखे वह कामिल है।”

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 416 प्रकाशन क़ादियान 2018)

★ ★ ★

## तुम ऐसे तरीक़ से कलाम किया करो जिसको दूसरा समझ सके और इस से उसकी ग़लतफ़हमी दूर हो सके

## जो शख़्स जल्द तेज़ हो कर ग़ुस्से और जोश में आ जाता है वह दूसरों को हरगिज़ समझा नहीं सकता

## दुश्मन के मुक़ाबला में जो बात कहो सच्ची कहो, दूसरों को हिदायत देते-देते ख़ुद ही गुमराह न हो जाओ

هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ○

अनुवाद : (और हे रसूल) तू (लोगों को) हिक्मत और अच्छी नसीहत के ज़रीया से अपने रब की राह की तरफ़ बुला। और उस तरीक़ से जो सबसे अच्छा हो, उनसे उनके इख़तेलाफ़ात के विषय में बेहस कर तेरा रब उनको (भी) जो उसकी राह से भटक गए हों (सब से) बेहतर जानता है और वह हिदायत पाने वालों को (भी सबसे) बेहतर जानता है की तफ़सीर में फ़रमाता है :

हिक्मत के माने हिल्म के भी होते हैं। फ़रमाया कि नरमी के साथ और अक़ल से काम लेते हुए बात किया करो। क्योंकि जो शख़्स ऐसा नहीं करता बल्कि जलद तेज़ हो कर ग़ुस्से और जोश में आ जाता है वह दूसरों को हरगिज़ समझा नहीं सकता।

नबुव्वत के अर्थों की दृष्टि से यह मतलब होगा कि इलाही कलाम की मदद से लोगों को दीन की तरफ़ बुलाओ। जो दलायल ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम ने दिए हैं उन्ही को पेश करो,

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

# हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

## सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग - 2)

28 सितंबर 2022 बुधवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर "मस्जिद फ़तह अज़ीम" में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई।

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अंजाम दही में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के मुताबिक़ 11 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

फ़ैमिली मुलाक़ात और तास्सुरात

आज सुबह के इस सैशन में 42 फ़ैमिलीज़ के 186 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाए।

आज ज़ायन (zion) की जमाअत के इलावा

| | |
|---|---|
| detroit | miami |
| chicago | los angeles |
| dayton | sacramneto |
| silicon valley | minnesota |
| milwaukee | georgia |
| st.louis | oshkosh |
| austin | kansas city |

की जमातों से आने वाले अहबाब और फ़ैमिलीज़ ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

कुछ मुक़ामात से अहबाब बड़े तवील तरीन सफ़र तै करके मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। केंसास से आने वाली फ़ैमिलीज़ 556 मील, जॉर्जिया से आने वाली 748 मील, लास अंजलीज़ से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2046 मील और सकारमेंटो से आने वाली फ़ैमिलीज़ और अहबाब 2072 मील का तवील सफ़र तै कर के पहुंचे थे।

आज मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ में बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से हिज्रत करके यहां आए थे और अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मिल रहे थे। उनकी ख़ुशी नाक़ाबिल-ए-बयान थी उन्होंने अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में जो चंद लमहात गुज़ारे वे उनकी सारी ज़िंदगी का सरमाया थे। उनमें से प्रत्येक बरकतें समेटते हुए बाहर आया और उनकी तकालीफ़ और परेशानियाँ राहत-ओ-सुकून में बदल गईं।

शिकागो ईस्ट से आने वाले अब्दुल नूर सलमान साहिब कहने लगे कि मैं मुलाक़ात का समय शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। यह मेरी सारी ज़िंदगी का एक यादगार तरीन वाक़िया है। मैंने हुज़ूर के चेहरे से नूर निकलते देखा है।

शिकागो से आने वाले एक दोस्त जब मुलाक़ात करके दफ़्तर से निकले तो रोने लग गए उनकी आँखों से आँसू रवां थे बड़ी मुश्किल से बात कर रहे थे। कहने लगे हुज़ूर ने मुझे फ़रमाया है कि नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पर तवज्जा दो कि यह है समस्त मुश्किलात का हल।

एक ख़ातून बीनिश अहमद साहिबा कहने लगीं कि यह आज की मुलाक़ात मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी ख़ाहिश थी जो आज पूरी हो गई। यह बात कहते हुए मौसूफ़ा रोने लगीं। कहने लगीं कि मैं आज कितनी ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि इतनी बड़ी जमाअत है और ख़ुदा तआला ने मुझे यह अवसर अता फ़रमाया है।

एक दोस्त शाहिद अहमद साहिब ने कहा कि मैं छयालीस साल का हो गया हूँ और कभी मुलाक़ात नहीं की। मुझे अपनी सारी ज़िंदगी में इस दिन का इंतिज़ार था। आज मुझे ऐसा रुहानी तजुर्बा हुआ है कि मैं इस को वर्णन नहीं कर सकता।

एक साहिब ज़ीरक महमूद साहिब कहने लगे कि मैं बहुत ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि मैं तो पाकिस्तान में था ख़ुदा तआला मुझे अमरीका लेकर आया और यहां मुझे मुलाक़ात की सआदत नसीब हुई।

एक दोस्त सय्यद जमशेद अली साहिब जब मुलाक़ात करके बाहर आए तो उनकी आँखों में आँसू थे। बहुत ख़ुशी का इज़हार कर रहे थे कि मैं तो अपने बिज़नस की कामयाबी के लिए दुआएं लेकर आया हूँ।

ज़ायन जमाअत के एक दोस्त एजाज़ुल हक़ साहिब कहने लगे कि हुज़ूर अनवर ने मुझे फ़रमाया कि अब आपने इस मस्जिद को आबाद करना है और पांचों नमाज़ों की अदायगी पर तवज्जा देनी है।

एक दोस्त ज़ैद अहमद जो जमाअत से 2072 मील की दूरी तै करके मुलाक़ात के लिए आए थे कहने लगे कि मुझे इस क़दर ख़ुशी है कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। मेरे पास अलफ़ाज़ नहीं हैं। आज में अमरीका में सिर्फ हुज़ूर की वजह से ही हूँ। हुज़ूर ने पाकिस्तान में मेरी फ़ैमिली का वज़ीफ़ा लगवाया था और इस बाबरकत वज़ीफ़े से मेरे चार भाईयों ने डिग्रियां हासिल कीं और इसी वज़ीफ़ा से मैं ने आई टी में मास्टर डिग्री हासिल की और आज उसी डिग्री की बदौलत अमरीका में मुलाज़मत हासिल की है।

एक साहिब मेजर नईम अहमद जो शिकागो से आए थे कहने लगे कि हमने यह मस्जिद बनवाई है। हम इस मस्जिद के बनाने वाले थे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद की तामीर पर ख़ुशी का इज़हार किया और फ़रमाया कि आप लोगों ने अत्यधिक ज़बरदस्त मस्जिद बनवाई है। गेस्ट हाऊस में और मस्जिद में कोई कमी नहीं रहने दी।

एक दोस्त हाफ़िज़ अली असग़र साहिब जो लास एजलीस 2046 मील का फ़ासिला तै करके मुलाक़ात के लिए आए थे कहने लगे कि हुज़ूर ने मुझे नसीहत करते हुए फ़रमाया कि और ज़्यादा क़ुरआन-ए-करीम को सुनो और पढ़ो ताकि हिफ़्ज़ क़ुरआन ठीक रहे।

एक दोस्त बशारत साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि मैं आठ साल पहले साउथ अफ़्रीक़ा से अमरीका आया था मैंने भी मस्जिद की तामीर में मदद की है। हुज़ूर से मुलाक़ात करके हम बेहद ख़ुश हैं। मुझे तसकीन क़लब हासिल हुई है।

लास से 2046 मील का फ़ासिला तै करके मुलाक़ात के लिए आने वाले एक दोस्त अहमद अली ख़ालिद साहिब जब मुलाक़ात के बाद दफ़्तर से बाहर निकले तो उनकी आँखों से आँसू रवां थे और दिल जज़बात से भरा हुआ था

शेष पृष्ठ 8 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

"मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का इक़रार चाहता है। अतः जो सच्चे दिल से मुझे क़बूल करता है और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है ग़फ़ूर-ओ-रहीम ख़ुदा उसके गुनाहों को ज़रूर बख़श देता है और वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है तब फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

सबसे बड़ा एहसान जो अल्लाह तआला ने हम अहमदियों पर किया है वह यह है कि उसने हमें ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़-ए-सादिक़ को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है

अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी यह है कि हम अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलें। अल्लाह तआला की इबादत के भी हक़ अदा करने वाले बनें और उस की मख़लूक़ के भी हक़ अदा करने वाले बनें

वहईमान जो ख़दशात और तुहमात से भरा हुआ है कोई नेक नतीजा पैदा करने वाला नहीं होगा लेकिन अगर तुमने सच्चेदिल से तस्लीम कर लिया है कि मसीह मौऊद वाक़ई हक़म है तो फिर उसके आदेश और फ़ेअल के सामने अपने हथियार डाल दो और उसके फ़ैसलों को इज़्ज़त की निगाह से देखो ताकि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक बातों की इज़्ज़त और अज़मत करने वाले ठहरो

ख़िलाफ़त के साथ वाबस्तगी और इताअत के अह्द को निभाना भी हर अहमदी का फ़र्ज़ है अन्यथा बैअत अधूरी है
"सच्ची बात यही है कि तुम इस चश्मे के क़रीब आ पहुंचे हो जो उस वक़्त ख़ुदा तआला ने अबदी ज़िंदगी के लिए पैदा किया है। हाँ पानी पीना अभी बाक़ी है"

"मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का इक़रार चाहता है। अतः जो सच्चे दिल से मुझे क़बूल करता है और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है ग़फ़ूर-ओ-रहीम ख़ुदा उसके गुनाहों को ज़रूर बख़श देता है और वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है तब फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।"

इस दुनिया ने हमें नहीं बचाना, न हमारा और हमारी नसलों का भविष्य महफ़ूज़ करना है बल्कि हम अगर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ कलिमा का हक़ अदा करने वाले होंगे तो अल्लाह तआला हमारी आजिज़ाना दुआओं और नेक-आमाल की वजह से दुनिया को बचा लेगा

जब हम कलिमा पढ़ते हैं तो क्या वाक़ई अल्लाह तआला हमें सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब है? उसकी रज़ा हासिल करना हमारा उद्देश्य है? वाक़ई हम अल्लाह तआला के हुक्मों की कामिल इताअत कर रहे हैं?

जो शख़्स हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ बावजूद समझाने के अपशब्दों के प्रयोग से बाज़ नहीं आता इस से भी हम दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ा सकते और न किसी अहमदी की ग़ैरत यह बर्दाश्त करती है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने के लिए अपनी रुहानी-ओ-अख़लाक़ी हालतों में बेहतरी पैदा करने की तलक़ीन
दुनिया को तबाही से बचाने के लिए दुआएं करने की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 अक्टूबर 2022 ई. स्थान - मेरी लैंड, यू.एस.ए.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला का आप पर यह बड़ा एहसान है, जमाअत-ए-अहमदिया पर बड़ा एहसान है, यहां इस मुल्क में आने वाले लोगों पर बड़ा एहसान है कि उसने आपको इस तरक़्क़ी याफताह मुल्क में आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और खासतौर पर पिछले कुछ सालों में पाकिस्तान से बहुत से अहमदी यहां आए हैं और अब भी आ रहे हैं। जो पाकिस्तान से इसलिए हिज्रत करके आए कि वहां अहमदियों के हालात सख़्त से सख़्त-तर होते चले जा रहे हैं और इस वजह से वहां रहना मुश्किल हो गया था और इस लिहाज़ से अहमदियों को इन हुकूमतों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए जिन्हों ने बहुत से मज़लूम अहमदियों को यहां रहने की जगह दी लेकिन

सबसे बड़ा एहसान जो अल्लाह तआला ने हम अहमदियों पर किया है वह यह है कि उसने हमें ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

आशिक़-ए-सादिक़ को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है।

अतः उसके लिए हम ख़ुदा तआला का जितना भी शुक्र करें वह कम है और अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी यह है कि हम अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलें। अल्लाह तआला की इबादत के भी हक़ अदा करने वाले बनें और इस की मख़लूक़ के भी हक़ अदा करने वाले बनें।

और यह तभी सम्भव है जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले बनेंगे क्योंकि इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही वह राहनुमा हैं जिन्हों ने हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के मुताबिक़ इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम पर हमें चलाया है।

अतः इस बात को हर अहमदी को अपने सामने रखना चाहिए कि अब हक़ीक़ी इस्लाम की तालीम हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया ही मिल सकती है।

क्योंकि आप अलैहिस्सलाम ही वह शख़्स हैं जिनको इस ज़माने में अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम के उलूम-ओ-मआरिफ़ अता फ़रमाए हैं और इस्लाम का हक़ीक़ी इलम अता फ़रमाया है। आप ही वह शख़्स हैं जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी आशिक़ हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम और सुन्नत के मुताबिक़ अपनी जमाअत की तर्बीयत करना चाहते हैं। अतः हमें हक़ीक़ी मुस्लमान बनने के लिए अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ ही देखना होगा और आप अलैहिस्सलाम के बताए हुए तरीक़ के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालना होगा। अपने ईमान को मज़बूत करना होगा। आप अलैहिस्सलाम के आने पर ईमान-ओ-यक़ीन-ए-कामिल करना होगा। आपको हक़म-ओ-अदल मानना होगा। इस यक़ीन पर क़ायम होना होगा कि अब आप के बताए हुए तरीक़ पर चल कर ही इन्सान इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम पर चल सकता है।

इसलिए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने पर कामिल यक़ीन और ईमान पर क़ायम होने की नसीहत करते हुए अपनी बैअत करने वालों को फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ईमान लाता है उसे अपने ईमान से यक़ीन और इर्फ़ान तक तरक़्क़ी करनी चाहिए।" केवल ईमान नहीं ले आए बल्कि इस पर यक़ीन भी पैदा होना चाहिए और इस का इर्फ़ान भी हासिल होना चाहिए कि क्यों हम बैअत कर रहे हैं। "न यह कि वह फिर संशय में गिरफ़्तार हो।" फिर यह नहीं है कि दिल में बद ज़न्नीयाँ पैदा हो जाएं कि यह क्यों हुआ और यह क्यों हुआ। सवाल न उठने शुरू हो जाएं। फ़रमाया कि "याद रखो संशय मुफ़ीद नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला ख़ुद फ़रमाता है। इन إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (यूनुस : 37)" यक़ीनन संशय हक़ से कुछ भी दूर नहीं कर सकता। "यक़ीन ही एक ऐसी चीज़ है जो इन्सान को बा-मुराद कर सकती है। यक़ीन के बग़ैर कुछ नहीं होता। अगर इन्सान हर बात पर बदज़नी करने लगे तो शायद एक दम भी दुनिया में न गुज़ार सके।" फ़रमाया कि "वह पानी न पी सके कि शायद इस में ज़हर मिला दिया हो। बाज़ार की चीज़ें न खा सके कि उनमें हलाक करने वाली कोई वस्तु हो। फिर किस तरह वह रह सकता है।" ज़िंदगी गुज़ारनी मुश्किल हो जाएगी यह एक मोटी मिसाल है। इसी तरह पर इन्सान रुहानी उमूर में इस से फ़ायदा उठा सकता है।" फ़रमाया कि "अब तुम ख़ुद सोच लो और अपने दिलों में फ़ैसला कर लो कि क्या तुमने मेरे हाथ पर जो बैअत की है और मुझे मसीह मौऊद हक़म अदल माना है तो इस मानने के बाद मेरे किसी फ़ैसला या फ़ेअल पर अगर दिल में कोई कुरूपता या दुख आता है तो अपने ईमान का फ़िक्र करो।

वह ईमान जो ख़दशात और तुहमात से भरा हुआ है, कोई नेक नतीजा पैदा करने वाला नहीं होगा। लेकिन अगर तुमने सच्चे दिल से तस्लीम कर लिया है कि मसीह मौऊद वास्तव में हकम है तो फिर उस के हुक्म और फ़ेअल के सामने अपने हथियार डाल दो। और इस के फ़ैसलों को इज़्ज़त की निगाह से देखो ता तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक बातों की इज़्ज़त और अज़मत करने वाले ठहरो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत काफ़ी है वह तसल्ली देते हैं कि वह तुम्हारा इमाम होगा।" अर्थात आने वाला मसीह मौऊद तुम्हारे में से तुम्हारा इमाम होगा। "वह हक़म अदल होगा। अगर इस पर तसल्ली नहीं हुई तो फिर कब होगी। यह तरीक़ हरगिज़ अच्छा और मुबारक नहीं हो सकता कि ईमान भी हो और दिल के बाअज़ गोशों में बद ज़न्नीयाँ भी हों।" ज़ाहिरी तौर पर यह इज़हार हो कि हम ईमान भी ले आए लेकिन फिर कुछ मुआमलात में बद ज़न्नीयाँ भी पैदा हो रही हों। फ़रमाया "... जिन लोगों ने मेरा इंकार किया है और जो मुझ पर एतराज़ करते हैं उन्होंने मुझे शनाख़्त नहीं किया और जिसने मुझे तस्लीम किया है और फिर एतराज़ रखता है वह और भी बदक़िस्मत है कि देखकर अंधा हुआ।" (मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 73-74 ऐडीशन 1984 ई.) अतः यह ईमान का मयार है जो हम सब का होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही अपने बाद ख़िलाफ़त के जारी रहने की इत्तिला दी थी। (उद्धरित रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 306) और सिर्फ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही नहीं बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मसीह-ओ-महदी के आने के साथ ख़िलाफ़त के ता क़ियामत जारी रहने की ख़बर दी थी।(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 6 पृष्ठ 285 मस्नद नुमान बिन बशीर हदीस 18596 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.) और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तरीक़ को ही जारी रखने वाला निज़ाम है। इस हुक्म और अदल के फ़ैसलों को ही जारी रखने वाला निज़ाम है। अपने अहद में हर अहमदी ख़िलाफ़त से भी वाबस्तगी और इताअत का अहद करता है। अतः इस लिहाज़ से

ख़िलाफ़त के साथ वाबस्तगी और इताअत के अहद को निभाना भी हर अहमदी का फ़र्ज़ है अन्यथा बैअत अधूरी है।

अतः इस लिहाज़ से भी अपने ईमान और यक़ीन को बढ़ाने की हर अहमदी को हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए।

फिर जमाअत को क़ुरआन-ए-करीम को ग़ौर से पढ़ने और उसे समझने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मैं बार-बार इस अमर की तरफ़ उन लोगों को जो मेरे साथ ताल्लुक़ रखते हैं नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को कश्फ़-ए-हक़ायक़ के लिए क़ायम किया है क्योंकि बदूं उस के अमली ज़िंदगी में कोई रोशनी और नूर पैदा नहीं हो सकता।" फ़रमाया "और मैं चाहता हूँ कि अमली सच्चाई के ज़रीया इस्लाम की ख़ूबी दुनिया पर ज़ाहिर हो जैसा कि ख़ुदा ने मुझे इस काम के लिए मामूर किया है। इसलिए क़ुरआन शरीफ़ को कसरत से पढ़ो परन्तु केवल क़िस्सा समझ कर नहीं बल्कि एक फ़लसफ़ा समझ कर पढ़ो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 155 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हर एक को अपने जायज़े लेने चाहिए। इस दुनिया की मसरुफ़ियात में डूब कर कहीं हम अपने बैअत के उद्देश्य को भूल तो नहीं गए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो फ़रमाते हैं कि कुरआन-ए-करीम के उलूम-ओ-मआरिफ़ और अहकामात को समझाने और उन पर अमल करवाने के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे मामूर किया है और जो मेरे सिलसिला-ए-बैअत में दाख़िल हैं इस एहमियत को समझें और क़ुरआन-ए-करीम के उलूम-ओ-मआरिफ़ पर ग़ौर करें। इस के मआनी और तफ़सीर को समझने की कोशिश करें और यह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रुहानी खज़ाने को भी हम समझने और पढ़ने की कोशिश नहीं करेंगे। आप के दिए हुए लिटरेचर को भी हम समझने और पढ़ने की कोशिश नहीं करेंगे। आप ने फ़रमाया कि

क़ुरआन-ए-करीम कोई क़िस्सा कहानियां नहीं हैं बल्कि ज़ाबित-ए-हयात है। एक लाह-ए-अमल है जिस पर अमल करना हर अहमदी मुस्लमान का फ़र्ज़ है।

अगर हम यहां आकर, इन मुल्कों में आकर अपने इस उद्देश्य को भूल गए और दुनिया की मसरुफ़ियात में ही ग़र्क़ हो गए, अपने घरों के माहौल को कुरान-ए-करीम की तालीम के मुताबिक़ ढालने की कोशिश न की तो हमारी औलादें और नसलें दीन से दूर होती जाएँगी और यह शुक्रगुज़ारी के बजाय अल्लाह तआला के फ़ज़लों की नफ़ी करने वाली बात होगी। अतः हर अहमदी के लिए चाहे वह पुराने अहमदी हैं, नए अहमदी हैं, यहां पैदा हुए हुए अहमदी हैं या हिज्रत करके आने वाले अहमदी हैं

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बहुत ग़ौर और सोचने की ज़रूरत है कि

अल्लाह तआला का क़ुरब और उसकी इबादत का हक़ अदा करना और उस की किताब को पढ़ना, समझना और इस पर अमल करना हमारा बुनियादी उद्देश्य होना चाहिए। तभी हम हक़-ए-बैअत अदा कर सकते हैं।

जो हिज्रत करके आए हैं वे दुनिया की मुख़ालिफ़त से तो यहां आकर बच गए हैं लेकिन अगर दीन पर चलने वाले और क़ुरआन-ए-करीम को समझने वाले नहीं तो फिर अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस नहीं बन सकते। इसी तरह जो नए होने वाले अहमदी हैं या यहां रहने वाले पुराने अहमदी हैं वो भी याद रखें कि सिर्फ बैअत करने से मक़सद पूरा नहीं होता। मक़सद तभी पूरा होगा जब हम अपने आपको इस्लामी तालीम का हामिल बनाएंगे और वह उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक हम अल्लाह तआला की किताब को पढ़ें और समझेंगे नहीं।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मैं सच्च कहता हूँ कि यह एक तक़रीब है जो अल्लाह तआला ने सआदत मंदों के लिए पैदा कर दी है। मुबारक वही हैं जो इस से फ़ायदा उठाते हैं। तुम लोग जिन्हों ने मेरे साथ ताल्लुक़ पैदा किया है इस बात पर हरगिज़ हरगिज़ मग़रूर न हो जाओ कि जो कुछ तुमने पाना था पा चुके। यह सच्च है कि तुम इन मुनकिरों की सम्बन्ध में क़रीब-तर सआदत प्राप्त करने वाले हो जिन्हों ने अपने शदीद इंकार और तौहीन से ख़ुदा को नाराज़ किया और यह भी सच्च है कि तुमने हुस्न-ए-ज़न से काम लेकर ख़ुदा तआला के ग़ज़ब से अपने आपको बचाने की फ़िक्र की लेकिन सच्ची बात यही है कि तुम इस चश्मे के क़रीब आ पहुंचे हो जो उस वक़्त ख़ुदा तआला ने अबदी ज़िंदगी के लिए पैदा किया है। हाँ पानी-पीना अभी बाक़ी है।

अतः ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से तौफ़ीक़ चाहो कि वह तुम्हें सेराब करे क्योंकि ख़ुदा तआला के बदों कुछ भी नहीं हो सकता।" ख़ुदा तआला का फ़ज़ल न हो तो उस के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता इसलिए अल्लाह तआला का फ़ज़ल हमेशा चाहो। फ़रमाया "यह मैं यक़ीनन जानता हूँ कि जो इस चशमा से पिएगा वह हलाक नहीं होगा क्योंकि यह पानी ज़िंदगी बख़्शता है और हलाकत से बचाता है और शैतान के हमलों से महफ़ूज़ करता है। इस चशमा से सेराब होने का क्या तरीक़ है? यही कि ख़ुदा तआला ने जो दो हक़ तुम पर क़ायम किए हैं उनको बहाल करो और पूरे तौर पर अदा करो। उनमें से एक ख़ुदा का हक़ है दूसरा मख़लूक़ का। अपने ख़ुदा को वहदहु ला शरीक समझो जैसा कि इस शहादत के ज़रीया तुम इक़रार करते हो اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ अर्थात मैं शहादत देता हूँ कि कोई महबूब, मतलूब और अल्लाह की आज्ञाकारिता के सिवा नहीं है। यह एक ऐसा प्यारा जुमला है कि अगर यह यहूदियों, ईसाईयों या दूसरे मुशरिक बुत परस्तों को सिखाया जाता और वह इस को समझ लेते तो हरगिज़ हरगिज़ तबाह और हलाक नहीं होते। इसी एक कलिमा के न होने की वजह से उन पर तबाही और मुसीबत आई और उनकी रूह मजज़ूम हो कर हलाक हो गई।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 184-185 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः देखें ! किस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तसल्ली दिलाई और ज़मानत दी है कि तुम जिस चश्मे के क़रीब पहुंचे हो, बैअत करके जिस बात का इक़रार किया है अगर इस से पानी पियोगे, फ़ैज़ उठाओगे, सिर्फ बातों तक ही न रहोगे बल्कि अमल भी करोगे तो फिर तुम्हें यह ज़मानत दी जाती है कि कभी तुम्हारी रुहानी हलाकत नहीं होगी क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही क़ुरआन-ए-करीम के पैग़ाम को और अल्लाह तआला के अहकामात को जारी करने के लिए तशरीफ़ लाए थे। फ़रमाया कि अतः इस बात को समझ लो कि सिर्फ बैअत काफ़ी नहीं है बल्कि अल्लाह तआला अमल को चाहता है और जो अमल करेगा वाही अल्लाह तआला के फ़ज़लों से ख़ाली नहीं रहता, कभी हलाक नहीं होता और यह अमली हालत उस वक़्त पैदा होगी जब اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का कलिमा तुम्हारे ज़ाहिर-ओ-बातिन की आवाज़ बन जाएगा। अल्लाह तआला से ज़्यादा तुम्हें कोई महबूब न हो अल्लाह तआला की रज़ा के इलावा किसी चीज़ की तलब न हो अल्लाह तआला के हुक्मों की कामिल इताअत हो। अब हर एक इस बात से अपने जायज़े ले सकता है कि

जब हम कलिमा पढ़ते हैं तो क्या वाक़ई अल्लाह तआला हमें सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब है? उसकी रज़ा हासिल करना हमारा मक़सूद है? वाक़ई हम अल्लाह तआला के हुक्मों की कामिल इताअत कर रहे हैं?

अगर नमाज़ों के वक़्त हमें नमाज़ें पढ़ने की तरफ़ फ़ौरी तवज्जा नहीं होती, अगर हम अपना दुनयवी काम छोड़ कर अल्लाह तआला की आवाज़ पर फ़ौरी लब्बैक कहते हुए नमाज़ के लिए हाज़िर नहीं होते तो मुँह से तो कलिमा पढ़ रहे हैं लेकिन एक मख़फ़ी शिर्क हमारे दिल में है। हमारे दुनियावी कारोबार ख़ुदा तआला के मुक़ाबले पर खड़े हैं। एक मोमिन तो इस यक़ीन पर क़ायम होता है और होना चाहिए कि मेरे कारोबार में बरकत, मेरे काम में बरकत अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पड़ती है और पढ़नी है और फिर यह किस तरह हो सकता है कि मेरे दुनयवी काम अल्लाह तआला की आवाज़ के मुक़ाबले पर आकर खड़े हो जाएं। अगर ऐसा है तो हमने कलिमा की रूह को समझा ही नहीं। हम मुँह से तो इक़रार कर रहे हैं लेकिन हमारे अमल हमारे इक़रार का साथ नहीं दे रहे। हम पानी के चशमा के नज़दीक तो आ गए हैं लेकिन पानी पीने की तरफ़ हाथ नहीं बढ़ा रहे। अतः आप ने फ़रमाया अगर यह सूरत-ए-हाल है तो फिर तो हक़-ए-बैअत अदा नहीं हुआ।

यह कलिमा शहादत इस बात की ही तलक़ीन नहीं करता, इस बात की ही तरफ़ तवज्जा नहीं फेरता कि अल्लाह तआला का हक़ अदा करना है बल्कि अल्लाह तआला ने जो हुक़ूक़ुल ईबाद के अदा करने की तलक़ीन फ़रमाई है और हुक्म दिया है इस पर अमल करने की तरफ़ भी तवज्जा दिलाता है।

और जब इन्सान ये दो हुक़ूक़ अदा करता है तो तब ही हक़ीक़ी मोमिन बनता है और तभी एक हक़ीक़ी अहमदी मुस्लमान बैअत का हक़ अदा करता है।

फिर आप अपनी बैअत में आने वालों को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं : "अगर दुनिया-दारों की तरह रहोगे तो इस से कुछ फ़ायदा नहीं कि तुमने मेरे हाथ पर तौबा की। मेरे हाथ पर तौबा करना एक मौत को चाहता है ताकि तुम नई ज़िंदगी में एक और पैदाइश हासिल करो।" अर्थात बैअत करने के बाद तुम्हें एक नई रुहानी ज़िंदगी मिलनी चाहिए। अगर वह रुहानी ज़िंदगी नहीं मिलती और वही माद्दी ज़िंदगी की ख़ाहिशात और प्राथमिकता हैं तो फिर ऐसी बैअत कुछ फ़ायदा नहीं देगी। फ़रमाया "बैअत अगर दिल से नहीं तो कोई नतीजा उस का नहीं।"

मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का इक़रार चाहता है। अतः जो सच्चे दिल से मुझे क़बूल करता है और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है ग़फ़ूर-ओ-रहीम ख़ुदा उसके गुनाहों को ज़रूर बख़श देता है और वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है तब फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।"

बिल्कुल मासूम हो जाता है। फ़रमाया कि "एक गांव में अगर एक नेक आदमी हो तो अल्लाह तआला उस नेक की रियाइत और ख़ातिर से इस गांव को तबाही से महफ़ूज़ कर लेता है लेकिन जब तबाही आती है तो फिर सब पर पड़ती है मगर फिर भी वह अपने बंदों को किसी न किसी नहज से बचा लेता है। अल्लाह की सुन्नत यही है कि अगर एक भी नेक हो तो उस के लिए दूसरे भी बचाए जाते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 262 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह बुनियादी उसूल हमेशा याद रखना चाहिए।

अल्लाह तआला अपने ख़ालिस बंदों की दुआओं को सुनता और उनके नेक अम्लों को क़बूल करता है।

अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारी इबादतें ख़ालिस अल्लाह तआला के लिए हों। हमारे अमल अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करने वाले हों।

आजकल जो दुनिया के हालात हैं उनसे ज़ाहिर हो रहा है कि बहुत ख़ौफ़नाक तबाही के बादल हमारे ऊपर मंडला रहे हैं।

अमरीका के सदर ने कल यह बयान दिया था कि अगर रूस के सदर ने ऐटमी हथियार का इस्तिमाल किया तो फिर उसके जवाब में दूसरी तरफ़ से भी प्रतिक्रिया होगी और फिर जो तबाही होगी वह दुनिया के ख़ातमे पर परिणाम देने

## हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

वाली होगी। अतः इन मुल्कों में रहने वाले ये न समझें, जो यहां हिज्रत कर के आए हैं वे यह ख़्याल न करें कि हम यहां महफ़ूज़ हैं। कोई भी किसी जगह महफ़ूज़ नहीं है। इन बड़ी ताक़तों के लीडरों के जब दिमाग़ उलटते हैं तो फिर ये कुछ नहीं देखते। अतः इन हालात में अहमदियों का ही काम है कि दुआ से काम लें। अपनी इबादतों को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस करें। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि नेक लोगों की ख़ातिर, अपने ख़ालिस बंदों की ख़ातिर अल्लाह तआला दूसरों को भी बचा लेता है और यही अल्लाह तआला के कलाम से क़ुरआन-ए-करीम से हमें पता चलता है। अतः इस सोच में किसी को नहीं रहना चाहिए कि यहां आकर हम महफ़ूज़ हो गए हैं, हमारे बच्चों के भविष्य महफ़ूज़ हो गए हैं। नहीं बल्कि बहुत ख़तरनाक दौर से हम गुज़र रहे हैं। अगर ऐसे हालात में कोई बच सकता है तो वह अल्लाह तआला की ज़ात है। अतः ख़ुद भी इस के आगे झुकें, अपनी नसलों को भी इस के आगे झुकने वाला बनाएँ ताकि अपने आपको भी महफ़ूज़ कर सकें और अपनी नसलों को भी महफ़ूज़ कर सकें।

इस दुनिया ने हमें नहीं बचाना न हमारा और हमारी नसलों का भविष्य महफ़ूज़ करना है बल्कि हम अगर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के कलिमा का हक़ अदा करने वाले होंगे तो अल्लाह तआला हमारी आजिज़ाना दुआओं और नेक-आमाल की वजह से दुनिया को बचा लेगा।

अतः आजकल के हालात में इस हवाले से भी बहुत दुआएं करें। इस से पहले कि दुनिया के हालात इंतेहा से ज़्यादा बिगड़ जाएं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "नेकी वही है जो क़बल अज़ वक़्त है। अगर बाद में कुछ करे तो कुछ फ़ायदा नहीं। ख़ुदा नेकी को क़बूल नहीं करता जो सिर्फ फ़िल्लत के जोश से हो। कुश्ती डूबती है तो सब रोते हैं।" कुश्ती डूबने लगे तो सब रोने लग जाते हैं इस से पहले हा हू हू रही होती है। "परन्तु वह रोना और चिल्लाना चूँकि तक़ाज़ा फ़िल्लत का नतीजा है इस लिए उस वक़्त लाभदायक नहीं हो सकता। और वह इस वक़्त मुफ़ीद है जो इस से पहले होता है जबकि अमन की हालत हो।"

फ़रमाया "निसंदेह समझो कि ख़ुदा को पाने का यही गुण है। जो क़बल अज़ वक़्त चौकन्ना और बेदार होता है ऐसा बेदार कि गोया उस पर बिजली गिरने वाली है। इस पर हरगिज़ नहीं गिरती।" अगर वह बेदार होगा और यह सोचेगा कि बिजली गिरने वाली है तो फिर बिजली नहीं गिरती जितने मर्ज़ी कड़के हो रहे हों। "लेकिन जो बिजली को गिरते देखकर चिल्लाता है उस पर गिरेगी और हलाक करेगी। वह बिजली से डरता है न ख़ुदा से।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 265 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः बड़े वाज़िह तौर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें सचेत कर दी कि ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ पैदा करना है तो अब करो। अभी तो ख़तरे के बादल ज़रा से उठे हैं या कम अज़ कम ऐसे हैं कि अगर चाहें तो कंट्रोल किए जा सकते हैं लेकिन किसी वक़्त भी ये फैल सकते हैं। अतः आज अहमदियों का ईमान और अल्लाह तआला से ताल्लुक़ और दुआएं दुनिया को तबाही से बचा सकती हैं।

दुनिया की हमदर्दी दिल में पैदा कर के दुआ करें। अपने अपने दायरे में दुनिया को समझाएँ कि अगर हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़उल-ईबाद की तरफ़ तवज्जा नहीं दी तो ये ख़ूबसूरत दुनिया विरानियों में बदल सकती है। अतः हर अहमदी इस सोच के साथ अपने फ़र्ज़ अदा करने की कोशिश करे।

दुआओं की तरफ़ मज़ीद तवज्जा दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "देखो! तुम लोग कुछ मेहनत कर के खेत तैयार करते हो तो फ़ायदा की उम्मीद होती है। इस तरह पुर अमन के दिन मेहनत के लिए हैं। अगर अब ख़ुदा को याद करोगे तो इस का मज़ा पाओगे। अगरचे दुनिया के कामों के मुक़ाबला में नमाज़ों में हाज़िर होना मुश्किल काम मालूम होता है। आप ने बड़ा वाज़िह फ़र्मा दिया देखो दुनिया के कामों के मुक़ाबले में नमाज़ों में हाज़िर होना बाअज़ दफ़ा बड़ा मुश्किल लगता है। और तहज्जुद के लिए और भी मुश्किल है। फ़रमाया मगर अब अगर अपने आपको इसका आदी कर लोगे तो फिर कोई तकलीफ़ नहीं रहेगी। अगर दुआएं करोगे तो वह करीम-ओ-रहीम ख़ुदा एहसान करेगा फ़रमाया "देखो अब काम तुम करते हो (यानी दुनयावी काम भी करते हो।) अपनी जानों और कुम्बा पर रहम तुम करते हो। (उनकी ज़रूरीयात की फ़िक्र करते हो।) बच्चों पर तुम्हें रहम आता है। जिस तरह अब उन पर रहम करते हो यह भी एक तरीक़ है (यानी दुनियावी लिहाज़ से जो तुम रहम करते हो एक तरीक़ और भी है।) वह क्या तरीक़ है कि नमाज़ों में उनके लिए दुआएं करो। रुकू में भी दुआ करो। फिर सज्दे में दुआ करो कि अल्लाह तआला इस बला को फेर दे और अज़ाब से महफ़ूज़ रखे।

जो दुआ करता है वह महरूम नहीं रहता।

यह कभी मुम्किन नहीं है कि दुआएं करने वाला ग़ाफ़िल पलीद की तरह मारा जाए। अगर ऐसा न हो तो ख़ुदा कभी पहचाना ही न जाए। वह अपने सादिक़ बंदों और ग़ैरों में इमतेयाज़ कर लेता है। एक पकड़ा जाता है दूसरा बचाया जाता है। ग़रज़ ऐसा ही करो कि पूरे तौर पर तुम में सच्चा इख़लास पैदा हो जाए।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 266 ऐडीशन 1984 ई.)

जबकि यह बातें उस ज़माने में आप ने कही थीं जब ताऊन की वबा फैली हुई थी लेकिन आजकल भी आलमी तबाही के जो आसार नज़र आ रहे हैं जैसा कि मैंने कहा उस के लिए ज़रूरी है कि हम अल्लाह तआला के हुज़ूर खासतौर पर झुकें और यही अपने आपको महफ़ूज़ करने का, दुनिया को महफ़ूज़ रखने का एक रास्ता है। फिर जमाअत को आला अख़लाक़ की नसीहत भी आप ने खासतौर पर फ़रमाई क्योंकि आला अख़लाक़ दिखाना भी अल्लाह तआला के हुक्मों में से एक हुक्म है। इसलिए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अख़लाक़ का दरुस्त करना बड़ा मुश्किल काम है जब तक इन्सान अपना अध्यन नहीं करता रहे यह इस्लाह नहीं होती।" अपना जायज़ा न लेते रहो, अपनी बातें जो तुम सारा दिन करते हो जिस तरह ज़िंदगी गुज़ारी, दिन गुज़ार रहे हो उसका जायज़ा न लो कि क्या अच्छाई की क्या बुराई की, क्या नेक बातें कीं, क्या ग़लत बातें कीं। जब तक जायज़ा न हो उस वक़्त तक इस्लाह नहीं हो सकती। फ़रमाया

"ज़बान की बद अख्लाक़ियां दुश्मनी डाल देती हैं इस लिए अपनी ज़बान को हमेशा क़ाबू में रखना चाहिए।"

फ़रमाया "देखो! कोई शख़्स ऐसे शख़्स के साथ दुश्मनी नहीं कर सकता जिसको अपना ख़ैर-ख़्वाह समझता है फिर वह शख़्स कैसा बेवक़ूफ़ है जो अपने नफ़्स पर भी रहम नहीं करता और अपनी जान को ख़तरा में डाल देता है जबकि वह अपने अंगों से अच्छा काम नहीं लेता और अख़लाक़ी कुव्वतों की तर्बीयत नहीं करता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 346 ऐडीशन 1984 ई.)

अर्थात अक्लमंदी का तक़ाज़ा यह है कि जो ताक़तें और सलाहियतें इन्सान के अंदर हैं, अल्लाह तआला ने दी हुई हैं उनकी ऐसी तर्बीयत हो, उनको ऐसे तरीक़ पर प्रयोग किया जाए कि इन्सान के हर अमल से आला अख़लाक़ का इज़हार हो रहा हो। ज़रा ज़रा सी बात पर अगर बदअख़्लाकी का मुज़ाहेरा करोगे तो अपनी जान को ख़ुद मुश्किल में डालोगे।

यह भी याद रखना चाहिए कि जहां इस्लाम ज़ाती मुआमलात में सब्र, ज़बत, तहम्मुल और आला अख़लाक़ के इज़हार और लड़ाई झगड़े से बचने की तलक़ीन करता है वहां क़ानून की हदूद में रह कर दीनी ग़ैरत दिखाने की तरफ़ भी तवज्जा दिलाता है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस दीनी ग़ैरत के इज़हार की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाते हैं : "वह शख़्स जो सिलसिला आलीया अर्थात दीन-ए- इस्लाम से ऐलानिया बाहर हो गया है और वह गालियां निकालता है और ख़तरनाक दुश्मनी करता है उसका मआमला और है जैसे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को मुश्किलात पेश आईं और इस्लाम की तौहीन उन्होंने अपने बाअज़ रिश्तेदारों से सुनी। तो फिर बावजूद ताल्लुक़ात शदीदा के "(अर्थात) गहरे ताल्लुक़ात होने के बावजूद, क़रीबी ताल्लुक़ात होने के बावजूद" उनको इस्लाम मुक़द्दम करना पड़ा।"

फ़रमाया "...एक शख़्स है जो इस्लाम का सख़्त दुश्मन है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता है वह इस काबिल है कि इस से बेज़ारी और नफ़रत ज़ाहिर की जाए लेकिन अगर कोई शख़्स इस किस्म का हो कि वह अपने आमाल में सुस्त है तो वह इस काबिल है कि उसके क़सूर से दरगुज़र किया जाए और उससे उन ताल्लुक़ात पर ज़द न पड़े जो वह रखता है।"(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 346 ऐडीशन 1984 ई.)

हाँ अगर कोई मुख़ालेफ़त नहीं कर रहा तो फिर उससे ताल्लुक़ात रखो। अच्छे ताल्लुक़ात रखो लेकिन जो खुल कर मुख़ालेफ़त कर रहा है या इस्लाम को और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां दे रहा है, बावजूद समझाने के बाज़ नहीं आ रहा तो फिर वहां दीनी ग़ैरत दिखानी चाहिए और इसी तरह पर हर अहमदी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुआमले में भी ग़ैरत दिखानी चाहिए।

जो शख़्स हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ बावजूद समझाने के अपशब्द से बाज़ नहीं आता इसी तरह उससे भी हम दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ा सकते और न किसी अहमदी की ग़ैरत यह बर्दाश्त करती है।

बहुत से आप में से हैं जो यहां पाकिस्तान से आए हैं। उन्हें ज़ाती तजुर्बा है कि किस किस्म की ग़लीज़ ज़बान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ वहां तथाकथित मुल्ला प्रयोग करते हैं। अगर हमें कहा जाए कि उनसे मुहब्बत का इज़हार किया जाए या उनके शर उन पर उल्टने की दुआ न की जाए तो हमारी ग़ैरत यह गवारा नहीं करती। वही उसूल जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया यहां भी चलेगा। हाँ हम ऐसे लोगों के ख़िलाफ़-ए-क़ानून भी हाथ में नहीं लेते क्योंकि यह भी इस्लामी तालीम का हिस्सा है कि किसी भी सूरत में क़ानून अपने हाथ में नहीं लेना। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक और ख़ूबी जो अहमदियों मैं बैअत के बाद होनी चाहिए वर्णन फ़रमाई। आप ने फ़रमाया कि आपस में मुहब्बत और प्रेम पैदा करो ।

उसकी तालीम देते हुए आप फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत को सरसब्ज़ी नहीं आएगी जब तक वह आपस में सच्ची हमदर्दी न करें। जो पूरी ताक़त दी गई है वह कमज़ोर से मुहब्बत करे। अर्थात जो भी सलाहियतें और ताक़तें दी गई हैं इस को इस्तिमाल में ला कर कमज़ोरों से मुहब्बत करो न कि नफ़रत का इज़हार या बेज़ारी का इज़हार। आप फ़रमाते हैं कि मैं जो यह सुनता हूँ कि कोई किसी की लग़्ज़िश देखता है तो इस से अख़लाक़ से पेश नहीं आता बल्कि नफ़रत और कराहत से पेश आता है। आप ने फ़रमाया यह तरीक़ दरुस्त नहीं। आप ने फ़रमाया जमाअत तब बनती है जब एक दूसरे की पर्दापोशी की जाए और हक़ीक़ी भाईयों की तरह एक दूसरे से सुलूक करो। आप ने बड़े दर्द से फ़रमाया कि यह तरीक़ दरुस्त नहीं कि जमाअत में अंदरूनी फूट हो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी मुहब्बत-ओ-उख़ुवत आपस में पैदा की और एक जमाअत बन गई। आप अपनी जमाअत के अफ़राद से भी यही चाहते हैं कि वह आपस में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तरह उख़ुवत का रिश्ता क़ायम करें। इसलिए फ़रमाया इसी तरह पर ख़ुदा तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया है (अर्थात जिस तरह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का सिलसिला था और इसी किस्म की उख़ुवत वह यहां क़ायम करेगा। ख़ुदा तआला पर मुझे बड़ी उम्मीदें हैं। फ़रमाया देखो एक दूसरे का शिकवा करना, दिल-आज़ारी करना और सख़्त-ज़बानी कर के दूसरे के दिल को सदमा पहुंचाना और कमज़ोरों और आजिज़ों को हक़ीर समझना सख़्त गुनाह है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 348-349 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह आला अख़लाक़ हैं कि एक दूसरे के जज़बात का ख़्याल रखा जाए और जब यह होगा तो तब ही हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उम्मीदों पर पूरा उतर सकते हैं, तब ही हम इन इनामों के वारिस हो सकते हैं जिनका वादा अल्लाह तआला ने आप से आपकी जमाअत के विषय में फ़रमाया है। तभी हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाले बन सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वक़्त में तो हिन्दुस्तान की मुख़्तलिफ़ कौमें और क़बीले जमाअत में शामिल हुए थे। अब तो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादे के मुताबिक़ दुनिया की मुख़्तलिफ़ क़ौमों और क़बीलों और रंग-ओ-नसल के लोगों को जमाअत में शामिल फ़र्मा दिया है और फ़र्मा रहा है। अतः यह अल्लाह तआला का मुख़्तलिफ़ क़ौमों और रंग-ओ-नसल के लोगों पर एहसान है कि उसने उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जमाअत में शामिल होने की, आप के गुलाम-ए-सादिक़ की जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और एक क़ौम बना दिया है। आप अलैहिस्सलाम ने इस तरफ़ तवज्जा दिलाई कि तुम आपस में भाई हो। फ़रमाया

"जबकि बाप जुदा-जुदा हों मगर आख़िर तुम सब का रुहानी बाप एक ही है और वह एक ही दरख़्त की शाख़ें हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 349 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क़त-ए-नज़र इसके कि हम किस नसल के हैं सफ़ैद फ़ाम हैं या अफ्रीकन, अमरीकन हैं या पाकिस्तानी हैं या हिन्दुस्तानी हैं या हिसपानवी नसल के हैं जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर हम एक रुहानी बाप की औलाद बन गए हैं और किसी को दूसरे पर नसल और क़ौम और रंग की वजह से बरतरी हासिल नहीं है क्योंकि हमारा रुहानी बाप एक ही है और यही ऐलान अपने आख़िरी ख़ुतबा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। अतः जब हम इस बात को समझ कर और एक हो कर काम करेंगे, एक दूसरे के जज़बात का ख़्याल रखेंगे तो अल्लाह तआला प्रगति से इन शा अल्लाह तआला हमें नवाज़ता रहेगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हमारी जमाअत को अल्लाह तआला एक नमूना बनाना चाहता है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 9 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क्या नमूना केवल सतही बातों से और बग़ैर किसी गहरे अमल के इन्सान बन सकता है। नमूना बनने के लिए तो बड़ा जिहाद करना पड़ता है, बड़ी मेहनत करनी पड़ती है और हमें भी करनी पड़ेगी। अपनी इबादतों के मयार बुलंद करते हुए भी और अपनी अख़लाक़ी हालतों को दरुस्त करते हुए भी और आपस में मुहब्बत और भाईचारे के ताल्लुक़ात के मयार क़ायम करते हुए भी हमें देखना होगा कि हम नमूने बन रहे हैं कि नहीं।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें अपने मयारों को हासिल करने की तरफ़ मज़ीद तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला मुत्तक़ी को प्यार करता है। ख़ुदा तआला की अज़मत को याद कर के सब तरसाँ रहो।" अर्थात अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और ख़शीयत दिल में पैदा करो "और याद रखो कि सब अल्लाह के बंदे हैं। किसी पर ज़ुलम न करो। न तेज़ी करो। न किसी को हक़ारत से देखो।" फ़रमाया "जमात में अगर एक आदमी गंदा होता है तो वह सबको गंदा कर देता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 9 ऐडीशन 1984 ई.)

आप ने फ़रमाया आला क़द्रें और आला अख़लाक़ उस वक़्त पैदा होते हैं जब दिल में तक़्वा हो।

इसलिए इस बारे में जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं : "हमारी जमाअत के लिए ख़ासकर तक़्वा की ज़रूरत है ख़ुसूसन इस ख़्याल से भी कि वह ऐसे शख़्स से ताल्लुक़ रखते हैं और इस के सिलसिला-ए-बैअत में हैं जिसका दावा मामूरियत का है ता वे लोग जो ख़ाह किसी किस्म के बुग़ज़ों, केनों या शिर्कों में मुबतला थे या कैसे रो-ब दुनिया थे इन समस्त आफ़ात से नजात पावें।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 10 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप ने फ़रमाया : "हमारी जमाअत यह ग़म कुल दुनयवी ग़मों से बढ़कर अपने जान पर लगाए।" दुनिया के बड़े ग़म इंसान को होते हैं लेकिन फ़रमाया नहीं, यह ग़म सबसे बढ़कर तुम्हारे दिल में होना चाहिए। क्या ग़म? "कि उनमें तक़्वा है या नहीं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 35 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः अगर हमने अपना हक़ बैअत अदा करना है, अगर हमने अल्लाह तआला के एहसानों पर उसका शुक्रगुज़ार होना है तो हमें अपनी हालतों का हर वक़त जायज़ा लेने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ाहिश के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालने वाले हों। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले हों। अल्लाह तआला की ख़शीयत हमारे अंदर पैदा हो जाए और हम हक़ीक़त में اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का हक़ अदा करने वाले बनें और हम आख़रीन की इस जमाअत में शामिल हो जाएं जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाई थी। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अभी आते हुए मुझे अमीर साहिब ने यह भी बताया कि आज से अट्ठाईस साल पहले आज के दिन ही 14 अक्तूबर को इस मस्जिद का भी उद्घाटन हुआ था और यह खोली गई थी। इस मस्जिद को अब अट्ठाईस साल हो गए हैं।

यहां रहने वाले इस इलाक़े में रहने वाले पुराने अहमदी भी, नए आने वाले भी जायज़ा लें कि इन अट्ठाईस सालों में उन्होंने अपनी रूहानियत मैं किस हद तक तरक़्क़ी की है। किस हद तक इस मस्जिद के हक़ को अदा करने की कोशिश की है।

अल्लाह तआला आइन्दा भी कई दहाईयां और कई सदियां इस मस्जिद में आने वालों को मुहय्या फ़रमाता रहे और यह हर किस्म की दुनियावी आफ़ात से भी बची रहे लेकिन असल हक़ तभी अदा होगा जब हम मस्जिदों के हक़ अदा करते हुए उन्हें आबाद करने की कोशिश करेंगे।

अल्लाह तआला इस की भी हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

कहने लगे मेरी ज़िंदगी की एक ही ख़ाहिश थी और वह आज अल्लाह तआला ने पूरी कर दी है।

डेट्रॉयट से आने वाले एक दोस्त बशारत अहमद ने कहा कि मैं अपने जज़बात को वर्णन करने की शक्ति नहीं पाता। यह मेरी ज़िंदगी में पहली मुलाक़ात थी। आज मैं अत्यधिक ख़ुश-क़िस्मत हूँ हमने हुज़ूर अनवर से दुआएं हासिल कीं।

जमाअत शिकागो ईस्ट से ताल्लुक़ रखने वाले एक दोस्त नवेद साहिब ने कहा कि इस वक़्त मेरा दिल जज़बात से भरा हुआ है। मेरी अपनी फ़ैमिली के साथ यह पहली मुलाक़ात थी। मुझे पता नहीं कि मेरे साथ क्या हुआ है बहुत excited हूँ। कुछ वर्णन नहीं कर सकता।

एक दोस्त ताहिर अहमद साहिब जो शिकागो जमाअत से आए थे मुलाक़ात के बाद अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहने लगे कि हम अपने आक़ा के सामने बोल ही नहीं सकते थे। कोई बात ही नहीं कर सकते थे। हमने सवालात की तैयारी भी की थी कि हुज़ूर से ये बातें करेंगे। लेकिन जूंही हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर नज़र पड़ी तो फिर हम सब कुछ भूल गए। मेरा सार शरीर काँप रहा था हम एक और ही दुनिया में थे।

शिकागो के एक दोस्त मुहम्मद ज़करिया साहिब कहने लगे कि मैं कितना ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि हुज़ूर अनवर ने मेरी बेटी के सिर पर अपना हाथ रखा और अपने साथ लगाया। हमने बरकतें हासिल कीं।

मुलाक़ातों का प्रोग्राम 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बैरूनी अहाता में तशरीफ़ ला कर पौधा लगाया। इसके बाद हुज़ूर अक़्दस अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

इजतेमाई मुलाक़ात-ओ-तास्सुरात

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए जहां मर्द अहबाब का एक ग्रुप की सूरत में इजतेमाई मुलाक़ात का प्रोग्राम था इस ग्रुप में शामिल अफ़राद की संख्या 27 थी जो मुक़ामी जमाअत ज़ायन के इलावा अन्य 14 जमाअतों से आए थे। उनमें बाअज़ केंटकी से 452 मील और जॉर्जिया से 748 मील का सफ़र तै कर के आए थे। जबकि सयाटिल से आने वाले 2014 मील और पोर्ट लैंड से आने वाले 2087 मील का तवील सफ़र तै करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह-ए-शफ़क़त बारी बारी समस्त अहबाब से उनका परिचय हासिल किया। उनसे दरयाफ़त फ़रमाया आप कहाँ से आए, कब आए, क्या काम कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़राह शफ़क़त प्रत्येक से उसका हाल दरयाफ़त फ़रमाया। जो तालिब-इल्म थे उनको हुज़ूर अनवर ने क़लम अता फ़रमाए जो छोटी उम्र के बच्चे बाप के साथ थे हुज़ूर अनवर ने अज़राह शफ़क़त उनको क़लम अता फ़रमाए।

एक दोस्त गुलफ़ाम अशर्फ़ साहिब ने बताया कि गुजरांवाला से ताल्लुक़ है हुज़ूर अनवर को देखकर मेरी आँखें ठंडी हुई हैं। उन्होंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि कम्पयूटर साईंस में बैचूलर किया हुआ है। अब हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात कर ली है तो इन शा अल्लाह इस मुलाक़ात की बरकत से मुझे जॉब भी मिल जाएगी। उन्हों ने इसके बाद अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि मैंने हुज़ूर अनवर को केवल देखकर ही अपने ईमान में बहुत ताक़त हासिल की है। हुज़ूर अनवर की सोहबत में बैठ मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना याद आगया है। हुज़ूर अनवर की सोहबत ने मुझे दीन की मज़ीद ख़िदमत करने का एहसास दिलाया है।

एक दोस्त ज़फ़र सलीम साहिब जो मिलवाकी जमाअत से आए थे उनकी आँखों में आँसू जारी थे। कहने लगे बस इतना कहना चाहता हूँ कि ख़लीफ़ा हमारा है और हम उसके हैं। हुज़ूर ने जिस शफ़क़त और प्यार से बात की है महसूस होता हैकि हमारे ऊपर ख़लीफ़ा वक़्त का साया है।

मियां अनवर अहमद साहिब जो शिकागो जमाअत से आए थे अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहने लगे कि ज़िंदगी में मेरी हुज़ूर अनवर से पहली मुलाक़ात थी जब मैं हुज़ूर से बात करने लगा तो मेरे हाथ काँप रहे थे मेरी ज़िंदगी की ख़ाहिश आज पूरी हो गई है। zion जमाअत से एक नौजवान achraf issam ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मेरा ताल्लुक़ मराक़श से है और मैं सदर जमाअत मराक़श आसाम अलख़ामसी साहिब का बेटा हूँ। 2011 ई. से यहां अमरीका में हूँ और यहां पढ़ाई मुकम्मल करके काम कर रहा हूँ। मौसूफ़ ने मुलाक़ात के बाद अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि बावजूद इसके कि यह ग्रुप मुलाक़ात थी लेकिन फिर भी हमें बहुत ज़्यादा वक़्त मिला। मेरे लिए तो ये बड़े ख़ास लमहात थे मैं गुज़श्ता चंद दिनों से मुसलसल डयूटी पर था लेकिन आज इस मुलाक़ात ने मुझ में दुबारा जान डाल दी है मुझे एक नई ज़िंदगी अता हुई है।

महमूद असलम साहिब जो कि डेट्रॉइट से आए थे कहने लगे कि ख़ुदा के नूर की तजल्ली मेरे सामने थी। हुज़ूर की तवज्जा मुझ पर थी। मुझे ज़िंदगी में सब कुछ मिल गया।

एक तालिब-ए-इलम समीउल्लाह साहिब जो कि रिचमंड जमाअत से आए थे कहने लगे कि हुज़ूर से मुलाक़ात मेरे लिए एक ख़ास तजुर्बा था। मुझसे बात नहीं हो रही थी। मैंने अपनी पढ़ाई की मदद के लिए हुज़ूर से क़लम की दरख़ास्त की हुज़ूर अनवर ने मुझे क़लम अता फ़रमाया अब मुझे यक़ीन है कि अल्लाह तआला मेरी मदद करेगा।

जमाअत सेंट लूइस से आने वाले एक दोस्त सय्यद ज़हीर अहमद शाह साहिब कहने लगे कि मेरे पास बात करने के लिए अलफ़ाज़ नहीं हैं। जो मैं महसूस कर रहा हूँ जो मेरी इस वक़्त हालत है मैं वर्णन नहीं कर सकता।

हैदराबाद इंडिया से आने वाले एक नौजवान ने अर्ज़ किया कि मैं आठ माह पहले यहां अमरीका में आया हूँ। आई टी में मास्टर करने आया हूँ मेरी शदीद ख़ाहिश थी कि हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हो आज अल्लाह तआला ने मेरी ख़ाहिश पूरी कर दी है।

हैदराबाद इंडिया से आने वाले एक और दोस्त ने अर्ज़ किया कि वह कम्पयूटर साईंस में बैचूलर कर रहे हैं। और एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि वह भी हैदराबाद इंडिया से हैं और इंजीनीयरिंग मैनिजमंट में मास्टर कर रहे हैं। इन सभी ने हैदराबाद जमाअत के मैंबरान और अपने अज़ीज़-ओ-अक़ारिब का सलाम हुज़ूर अनवर को पहुंचाया। और दुआ की दरख़ास्त की। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप लोग आई टी, कम्पयूटर साईंस में मास्टर्ज़ करने यहां आए हुए हैं जब कि इंडिया इस फ़ील्ड में बहुत आगे है और वहां तालीम का मयार बहुत अच्छा है।

इस इजतेमाई मुलाक़ात के आख़िर पर समस्त अफ़राद ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

6 बजकर 45 मिनट पर यह मुलाक़ात अपने इख़ततताम को पहुंची। इसके बाद हुज़ूर अनवर एक दूसरे हाल में तशरीफ़ ले गए जहां लजना के ग्रुप की हुज़ूर अनवर के साथ इजतेमाई मुलाक़ात थी। महिलाओं की संख्या 80 थी जो कि जमाअत zion के इलावा अन्य 17 मुख़्तलिफ़ जमाअतों और इलाक़ों से आई थीं। जमाअत जॉर्जिया से आने महिलाओं ने 748 मील, और मियामी आने वालिय 1408 मील और सयाटिल से आने वाली महिलाओं ने 2014 मील का फ़ासिला तै कर के हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं।

जब कि लास अंजलीज़ से सफ़र करके आने वाली 2046 और पोर्ट लैंड से वाली ख़्वातीन 2087 मील का तवील सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। हुज़ूर अनवर ने महिलाओं से उनका परिचय और तालीम और कैरियर के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। तालिबात को हुज़ूर अनवर ने अज़राहे शफ़क़त क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र की बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाएं।

बाअज़ महिलाओं ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपनी "الیس اللہ بکافٍ عبدہ" की अँगूठियां तबर्रुक करने की दरख़ास्त की। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त इस दरख़ास्त को क़बूल फ़रमाया। बाअज़ महिलाओं ने अपने प्यारे

आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत भी पाई। लजना के साथ ये मुलाक़ात साढ़े सात बजे तक जारी रही। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। 29 सितंबर 2022 ई. बरोज़ जुमेरात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों से बज़रीया Fax और ईमेल के ज़रीया आने वाले ख़ुतूत और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायात से नवाज़ा। तथा हुज़ूर अनवर की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अदायगी में मस्रूफ़ियत रही। 1 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जब भी नमाज़ें पढ़ाने के लिए अपनी रिहायश गाह से मस्जिद तशरीफ़ लाते हैं और फिर वापस जाते हैं तो रास्ते के दोनों अतराफ़ मुख़्तलिफ़ जगहों पर अहबाब जमाअत और महिलाएं खड़े होते हैं और प्यारे आक़ा से अपने इशक़-ओ-मुहब्बत और अपनी फ़िदाईयत के जज़बात का इज़हार पुर जोश और वालेहना नारों से कर रहे होते हैं। प्रत्येक तरफ़ से अस्सलामो अलैकुम हुज़ूर और "इन्नी मा-आ-का या मसरूर" की आवाज़ें आ रही होती हैं और मुसलसल नारे बुलंद हो रहे होते हैं। बच्चियां अपनी मुहब्बत का इज़हार अपनी दुआइया नज़मों से करती हैं।

मस्जिद के बैरूनी अहाता में मुख़्तलिफ़ जगहों पर बड़ी संख्या में मारकीज़ लगाई गई हैं। तीन मारकीज़ में अहबाब और महिलाओं के लिए नमाज़ पढ़ने का इंतेज़ाम किया गया है। दो बड़ी मारकीज़ में मर्दों और महिलाओं के लिए अलैहदा अलैहदा खाना खाने का इंतेज़ाम है। मर्द-ओ-महिलाओं के अलैहदा अलैहदा रजिस्ट्रेशन के लिए और अलैहदा covid टैस्ट के लिए भी मारकीज़ लगाई गई हैं। खाना पकाने के लिए भी एक अलैहदा मारकी है। इसी तरह मेहमानों के खाना खाने के लिए भी एक अलैहदा इंतेज़ाम किया गया है।

अमरीका के मुख़्तलिफ़ ख़तों से दो दो हज़ार मील से ज़ायद फ़ासलों से अहबाब मर्द और महिलाएं यहां आकर बैठे हुए हैं और सारा सारा दिन उन मारकीज़ में गुज़ार देते हैं। अपने प्यारे आक़ा के दीदार का कोई लम्हा हाथ से जाने नहीं देते। ये बड़े मुबारक और बरकतों और अल्लाह के फ़ज़लों के हुसूल के दिन हैं। यहां आने वाला प्रत्येक इन बरकतों से फ़ैज़ पा रहा है।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

आज शाम के इस सैशन में फ़ैमिली मुलाक़ातों के इलावा मर्दों और औरतों के अलैहदा अलैहदा ग्रुपस की सूरत में मुलाक़ातें भी शामिल थीं। फ़ैमिली मुलाक़ातों में छः ख़ानदानों के 27 अफ़राद ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की सआदत पाई। इन सभी ने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने विद्यार्थियों और तालिबात को अज़राह-ए-शफ़क़त क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाए।

ग्रुपस मुलाक़ातें

इन फ़ैमिली मुलाक़ातों के बाद मुख़्तलिफ़ ग्रुपस की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। लजना के ग्रुपस की संख्या चार थी। मजमूई तौर पर 28 महिलाओं ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। ये सभी वे महिलाएं थीं जो अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात की सआदत पा रही थीं और मुख़्तलिफ़ 10 जमाअतों से आई थीं। पाकिस्तान से आने वाली बाअज़ महिलाओं ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

इसके बाद मर्द अहबाब ने भी चार मुख़्तलिफ़ ग्रुपस की सूरत में मुलाक़ात की सआदत पाई। अहबाब की संख्या 43 थी। यह अहबाब ज़ाइन (zion) के इलावा दीगर मुख़्तलिफ़ चौदह जमाअतों और इलाक़ों से बड़े लंबे सफ़र तै कर के आए थे। kentucky से आने वाले 452 मील का सफ़र तै कर के आए थे और binghamton से आने वाले 750 मील जबकि सयाटिल (seattle) से आने वाले 2014 मील और लास ऐंजलिस (los angeles) से आने वाले 2046 मील का तवील सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंचे थे। इलावा अज़ीं पाकिस्तान से आने वाले बाअज़ अहबाब ने भी मुलाक़ात की सआदत पाई।

यह सभी वे लोग थे जो अपनी ज़िंदगी में पहली बार हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रहे थे। इन सभी ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। उनकी ख़ुशी ना-काबिल वर्णन थी।

मुलाक़ातियों के ज़ायन (zion) जमाअत के एक दोस्त उसमान mbowe साहिब ने वर्णन किया कि दो दिन क़बल जब हम मस्जिद के बाहर खड़े थे तो हुज़ूर अनवर ने गुज़रते हुए मेरी तरफ़ और मेरे बेटे की तरफ़ महिज़ एक लम्हा के लिए देखा था और फिर आज हमारी फ़ैमिली मुलाक़ात हुई थीं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैंने आपको दो दिन पहले मस्जिद के बाहर देखा था। मैं हैरान रह गया कि हुज़ूर को यह छोटी सी बात कैसे याद है।

एक महिला खालिदा बकर साहिबा ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि बहुत अरसा पहले मैंने हुज़ूर अनवर को ख़त लिखा था कि मैं आपसे मिलना चाहती हूँ। मेरी आपसे कभी मुलाक़ात नहीं हुई। मैं चाहती हूँ कि हुज़ूर यहां ज़ायन तशरीफ़ लाएंगे। आज मुझे इस बात का यक़ीन नहीं हो रहा हमारे वहम-ओ-गुमान में नहीं था कि हुज़ूर यहाँ भी आएँगे। मैं कितनी ख़ुशनसीब हो कि हुज़ूर से मेरी मुलाक़ात हो गई है।

एक ख़ातून जो कि कोलंबस (columbus) से आई थीं, कहने लगीं कि आज की मुलाक़ात मेरे लिए एक ख़ास इलाही लम्हा था। हमें कल तक मालूम ही नहीं था कि आज हमारी मुलाक़ात है। हमारी मुलाक़ात तो एक मोजज़ाना मुलाक़ात हुई है। यह कहते हुए मौसूफ़ा रोने लग गईं।

एक दोस्त रयान अहमद साहिब जो पाकिस्तान से आए थे। कहने लगे कि में इस तजुर्बे को अलफ़ाज़ में वर्णन नहीं कर सकता। जैसे ही मैंने हुज़ूर अनवर की

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

तरफ़ देखा तो इस दुनिया में न रहा और बात करने के लिए जो सोचा था सब कुछ भूल गया।

शिकागो के एक दोस्त नोमान अहमद साहिब ने कहा कि मुलाक़ात से क़बल मेरी यह हालत थी कि मुझसे सांस नहीं लिया जा रहा था। बड़ी घबराहट और बेचैनी थी। जैसे ही मैं कमरे में दाख़िल हुआ हुज़ूर अनवर का चेहरा देखा तो मैं सांस लेने के काबिल हो गया।

हाफ़िज़ इमरान अहमद साहिब मियामी (miami) से आए थे कहने लगे कि मैंने हुज़ूर अनवर को बताया कि मैं इस विभाग का अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर हूँ जिस में हुज़ूर ने तालीम हासिल की है अर्थात ज़राअत, तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ज़राअत तो एक वसीअ मैदान है। आप खासतौर पर क्या सिखाते हैं? मैंने अर्ज़ किया कि फ़ूड साईंस पढ़ाता हूँ।

एक दोस्त micheal carpenter ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा कि मैंने बैअत केवल तीन माह क़बल की थी। नौ अहमदी हूँ। मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि मुलाक़ात में क्या होता है। मुलाक़ात कैसे होगी। हुज़ूर अनवर से मिलकर अब मुझे यक़ीन है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा तआला ने ख़ुद चुना हुआ है।

शिकागो जमाअत से सय्यद साक़िब साहिब वर्णन करते हैं कि मेरी पत्नी मुलाक़ात में रोने लग गई थी। अहलिया ने सोला साल क़बल बैअत की थी और यह अफ़ग़ानिस्तान से है। इस को इस बात की फ़िक्र थी कि वह उर्दू ज़बान सही तरह नहीं बोल सकती तो हुज़ूर अनवर को इस की बात समझ नहीं आएगी। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपकी उर्दू ठीक है। हुज़ूर अनवर ने यह भी फ़रमाया कि आप यह न समझें कि आप नौ मुबाईन हैं अब आप यह समझें कि आप पैदाइशी अहमदी हैं और जो एक पैदाइशी अहमदी से तवक़्क़ुआत होती हैं वही आपसे हैं। इन तवक़्क़ुआत के मुताबिक़ अमल करें।

एक दोस्त इमरान चौधरी साहिब कहने लगे कि मेरी ख़ुशी की तो इंतिहा नहीं है हुज़ूर अनवर ने शफ़क़त फ़रमाते हुए मेरी बेटी के लिए रूमाल और चॉकलेट दी।

एक दोस्त अलताफ़ साहिब binghamton जमाअत से आए थे कहने लगे कि आज मैंने हुज़ूर अनवर से बात की। हुज़ूर अनवर ने मेरी बात को ग़ौर से सुना और मुझे अपने मश्वरों से नवाज़ा। मुझे और क्या चाहिए था मुझे तो सब कुछ मिल गया जमाअत oshkosh से आने वाले दोस्त हाफ़िज़ इनामुल हक़ साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार किया और बताया कि मैं अपने बारे में फ़िक्रमंद था लेकिन हुज़ूर अनवर से मिलकर मेरी समस्त परेशानियाँ ख़त्म हो गई हैं। हुज़ूर अनवर की दुआएं मेरे साथ हैं।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 7 बजकर 30 मिनट तक जारी रहा।

अहमदिया मुस्लिम साइंटिस्ट एसोसीएशन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

मुलाक़ातों के प्रोग्राम के बाद अहमदिया मुस्लिम साइंटिस्ट एसोसीएशन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात थी। इस मुलाक़ात का इंतेज़ाम एक हाल में किया गया था। हुज़ूर अनवर इस हाल में तशरीफ़ ले गए। प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो मुकर्रम मुनीब शरीफ़ साहिब ने की। इसके बाद एसोसीएशन आफ़ अहमदिया मुस्लिम साइंटिस्ट के सदर डाक्टर सुहेल हुसैन साहिब आफ़ सिलीकोन वैली ने अपना परिचयी ऐडरैस पेश किया। डाक्टर साहिब मौसूफ़ इस्टेन फ़ोर्ड यूनीवर्सिटी कैलीफोर्निया में प्रोफ़ैसर हैं। डाक्टर साहिब ने बताया दिसंबर 2019 में अहमदिया मुस्लिम रिसर्च कान्फ्रैंस बर्तानिया में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया तो हुज़ूर अनवर के ख़िताब से ही हम ने इस असोसिएशन के मर्द और महिला मैंबरान ने अपने मक़ासिद को सामने रखा हैऔर हमने अपना यह मिशन रखा है कि साईंस और टैक्नोलोजी के अगले इस्लामी सुनेहरी दौर की क़ियादत इंशा अल्लाह अहमदी मुस्लिम साइंटिस्ट ने करनी है। डाक्टर साहिब ने यह भी बताया कि हम अपने सालाना प्रोग्रामों में क़ुरआन और साईंस सिंपोज़ियम का आयोजन भी करते हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि इस वक़्त जो मैंबरान यहां बैठे हैं वे कितने हैं और उनमें पी.एच.डी कितने हैं? इस पर मौसूफ़ ने अर्ज़ किया कि यहां 46 मर्द और 37 मैंबरान महिलाओं मौजूद हैं और इस 83 की संख्या में से 35 पी.एच.डी हैं।

इसके बाद अहमदी महिलाए साइंटिस्ट एसोसीएशन की सदर डाक्टर नुसरत शरीफ़ साहिबा ने अपना ऐडरैस पेश किया। डाक्टर नुसरत साहिबा फ़ाइज़र (pfizer) में फ़ारमासूवटीकल की सीनीयर प्रिंसिपल साईंसदान हैं।

मौसूफ़ा ने मर्द और महिलाओं दोनों एसोसीएशन के मुशतर्का वज़न (vision) के बारे में बताया कि हमने ख़ुलफ़ा-ए-अहमदिया की ख़ाहिश की बुनियाद पर 100 प्रोफ़ैसर अब्दुलसलाम बनाने हैं। अपनी इस कोशिश को आगे बढ़ाते हुए डाक्टर नुसरत साहिबा ने दोनों एसोसीएशन की फेशल मैंबर शिप के मौजूदा डेमोग्राफिक (demographic data) को पेश किया और बताया कि कम अज़ कम दस उम्मीदवार अब्दुलसलाम मौजूद हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रहमहुल्लाह ने इस ख़ाहिश का इज़हार किया था कि जमाअत की जुबली के साल हमारे पास यह साइंटिस्ट होने चाहिए। 1989 ई. से अब तक 33 साल हो चुके हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अगले चंद सालों में कम से कम एक या दो अबदूस्सलाम होने चाहिए।

इसके बाद निमंलिखित अहमदी शोधकर्ताओं ने इख़तिसार के साथ अपनी रिसर्च हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सामने पेश की।

सबसे पहले डाक्टर अतहर नवीद मलिक साहिब ने अपनी रिसर्च पेश की। मौसूफ़ एम.टी. पी एचडी, ब्राउन यूनीवर्सिटी में न्यूरोसर्जरी और न्योरो साईंस के अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर हैं।

उन्हों ने कोमा (coma) और मुताल्लिक़ा दिमाग़ी अमराज़ के ईलाज में एक ग़ैरमामूली बेहतरी लाने के लिए अपनी तहक़ीक़ के बारह में बताया। उन्हों ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि अभी यह तहक़ीक़ जारी है।

इसके बाद डाक्टर आसिफ़ जमील साहिब ने अपनी तहक़ीक़ पेश की। मौसूफ़ भी पी.एच.डी हैं और हारवर्ड मैडीकल स्कूल में इंस्ट्रक्टर हैं। मौसूफ़ ने दिमाग़ी मुहर्रिकात के आलात (brain stimulation devices) से आसाबी और नफ़सियाती अमराज़ का ईलाज करने के बारे में अपनी तहक़ीक़ के बारे में बताया और अर्ज़ किया कि अभी यह रिसर्च जारी है।

इसके बाद डाक्टर अब्दुल नसीर साहिब ने अपनी रिसर्च के बारे में बताया। मौसूफ़ भी पी.एच.डी हैं और आगस्टा यूनीवर्सिटी में फिज़िक्स के अस्सिटैंट प्रोफ़ैसर हैं। मौसूफ़ ने बताया कि वह जिस्म के समस्त ख़लयात (cells) खासतौर पर कैंसर के ख़लयात की मुंतकली के पीछे बुनियादी तबीआत को समझने की तहक़ीक़ कर रहे हैं। उनकी यह तहक़ीक़ हाल ही में दुनिया के माद्दी साईंस के सबसे बड़े जरीदे में शाय हुई है। जिसका शीर्षक है "फ़िल्ती मवाद"

इसके बाद डाक्टर फ़ैज़ान अबदुल्लाह गोरा साहिब ने अपनी तहक़ीक़ पेश की। मौसूफ़ एम.डी, पी. एच.डी, नॉर्थ वेस्टर्न यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर और चीफ़ आफ़ पीडियाट्रिक सर्जरी (pediatric surgery) और नॉर्थ वेस्टर्न यूनीवर्सिटी शिकागो में सैंटर फ़ार ग्लोबल सर्जरी (center For global surgery) के डायरेक्टर हैं। उन्होंने अपनी रिसर्च का वर्णन करते हुए बताया कि वे बच्चों में पहनने के काबिल सेंसर (wearable sensors) प्रयोग करके किसी भी सर्जरी के बाद के नतायज को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं।

इसके बाद मुजीब एजाज़ साहिब जो ONE (our next energy) के चीफ़ ऐगज़ैक्टिव ऑफीसर (ceo) हैं, उन्होंने अपनी कंपनी की इलैक्ट्रिक बैट्री टैक्नोलोजी (electric battery technology) के बारे में बताया जो इलैक्ट्रिक गाड़ियों के लिए एक हज़ार किलोमीटर के सफ़र में एक ही चार्ज पर मदद फ़राहम करती है।

इसके बाद अदील मलिक साहिब जो clearstep inc के चीफ़ ऐगज़ैक्टिव ऑफीसर (ceo) हैं उन्होंने बताया कि वह ज़रूरतमंदों की देख-भाल के लिए artificial intelligence को प्रयोग कर रहे हैं और इस बारे में रिसर्च कर रहे हैं।

इसके बाद महिलाओं की तरफ़ से डाक्टर शहनाज़ बट साहिबा ने अपनी

रिसर्च के बारे में बताया। मौसूफ़ा पी. एच.डी हैं और सेंट जोज़फ़ यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं और इसी यूनीवर्सिटी में न्योरो साइको फार्मा साईकोलोजी लैब (neuropsycho pharmacology lab) की डायरेक्टर हैं। मौसूफ़ा ने बताया कि वह मुख़्तलिफ़ नफ़सियाती अवारिज़ (psychological disorder) में stress के किरदार का मुताला करने के लिए मुख़्तलिफ़ साईंसी मॉडल प्रयोग कर रही हैं।

इसके बाद ओलीविया विलियम्ज़ बारबर साहिबा (olivia williams barber) ने अपनी तहक़ीक़ के हवाले से बताया कि मौसूफ़ा नॉर्थ वेस्टर्न यूनीवर्सिटी शिकागो में (environmental engineering) मैं पी. एच.डी की candidate हैं। मौसूफ़ा ने अपनी रिसर्च के हवाले से बताया कि किस तरह घर के अंदर जरासीम कुश छिड़कने (spraying disinfectant) से antibiotic resistant bacteria का मसला पैदा हो सकता है।

इसके बाद नायला रज़्ज़ाक़ साहिबा ने अपनी तहक़ीक़ के हवाले से बताया। मौसूफ़ा yale यूनीवर्सिटी में early mediterranean religions की पी .ऐच .डी candidate हैं। उन्होंने बताया कि वह इस्लाम के आग़ाज़ में बहीरा रुम के इलाक़े का मुताला करने के लिए archeology में नए तरीक़े प्रयोग कर रही हैं।

हुज़ूर अनवर ने खासतौर पर इन रिसर्च करने वालों से उनके काम के नताइज और मुआशरे पर उसके असरात के बारे में पूछा।

आख़िर पर एसोसीएशन ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में एक आस्ट्रो लैब पेश किया। एक ऐसा आला जो पहले ज़मानों में फ़लकियाती पैमाइश के लिए प्रयोग होता था। इबतेदाई मुस्लमान साईंसदानों ने उसे ईजाद किया था।

मुलाक़ातों का प्रोग्राम 8 बजकर 5 मिनट तक जारी रहा इसके बाद सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

शेष आगे ....

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

अपने पास से ढकोसले न पेश करों। आह! अगर इस गुण को मुस्लमान समझते तो यहूदियत और ईसाइयत को खा जाते। हमारा हथियार क़ुरआन-ए-करीम ही है जिसके सम्बन्ध में अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ (फ़ुर्क़ान रुकू : 5) इस क़ुरआन की तलवार लेकर दुनिया से जिहाद के लिए निकल खड़ा हो, पर अफ़सोस कि आज दुनिया की हर चीज़ मुस्लमान के हाथ में है लेकिन अगर नहीं तो यही तलवार, जिसको लेकर निकल खड़े होने का हुक्म था।

مَا يَمْنَعُ مِنَ الْجَهْلِ से आयत का मतलब बनेगा कि तुम ऐसे तरीक़ से कलाम किया करो जिसको दूसरा समझ सके और उससे उसकी ग़लतफ़हमी दूर हो सके। अर्थात वह बात होनी चाहिए जो जहालत का अंत करे और मुख़ातब की समझ के अनुसार हो। इसलिए हदीस में आता है। "اَمَرَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اَنْ نُكَلِّمَ النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ" (देलमी) कि हम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि लोगों से उनके फ़हम और इदराक के मुताबिक़ बात किया करो। कुछ लोग लैक्चर देते हैं तो मोटे-मोटे लफ़्ज़ और इस्तेलाहें प्रयोग करके रोब डालना चाहते हैं। इन तक़रीरों से जाहिलों पर रोब तो ज़रूर पड़ जाता होगा परन्तु फ़ायदा उनकी तक़रीर से कोई नहीं उठाता।

मुवाफ़िकुल हक़ कलाम को भी हिक्मत कहते हैं। अनुमानों की दृष्टि से आयत का अर्थ ये होगा कि ऐसी बात किये करो। जो सच्ची और वाक़ियात के मुताबिक़ हो। कुछ ग़लत बातों को भी वर्णन कर देते हैं। फ़रमाया कि यह तरीक़ ग़लत है। दुश्मन के मुक़ाबला में जो बात कहो सच्ची कहो। दूसरों को हिदायत देते-देते ख़ुद ही गुमराह न हो जाओ जैसे कि फ़रमाया। لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ (मायदा रुकू : 14) अगर तुम हिदायत पर क़ायम रहते हो तो उसकी परवाह न करो कि दूसरा गुमराह होता है। अर्थात कोई ऐसी बात जो गुनाह हो इस ख़्याल से न करो कि उसके ज़रीया से मैं दूसरे को हिदायत दूँगा। जब तुम्हारी हिदायत और दूसरे की हिदायत टकरा जाए तो उस वक़्त तुम अपनी हिदायत की फ़िक्र करो और दूसरे की हिदायत को ख़ुदा पर छोड़ दो कि अल्लाह तआला यह पसंद नहीं करता कि मोमिन काफ़िर हो जाए और काफ़िर मोमिन। वह दूसरों को हिदायत देना चाहता है।

हिक्मत, महल-ओ-मौक़ा के मुनासिब बात करने को भी कहते हैं। अनुमानों की दृष्टि से मतलब आयत का यह होगा कि तब्लीग़ में अवसर के अनुसार बात करनी चाहिए। अगर बाअज़ दलायल से दुश्मन के क्रुद्ध होने का अंदेशा हो और ख़तरा हो कि वह इस तरह से तुम्हारी बात नहीं सुने गा तो यह मुनासिब नहीं कि बिला वजह उस को चढ़ाओ। तुम उसके सामने दूसरे दलायल वर्णन करो जिनको वह ठंडे दिल से सुन सके। यानि बात करते वक़्त पहले स्वभाव पहचान लिए करो। अगर तुम उस को ख़्वाह-मख़ाह भड़काऊगे, तो कोई फ़ायदा नहीं होगा।

अल्लाह अल्लाह क्या मुख़्तसर शब्दों में तब्लीग़ के सब गुण वर्णन दिए हैं। जो शख़्स भी उन पर अमल करेगा कभी अपने मक़सद में नाकाम नहीं रहेगा ।

الموعوظة الحسنه मोइज़ा हसना के माने पहले गुज़र चुके हैं। अर्थात वह कलाम जो दिलों को नरम कर देता हो, और उन पर गहरा असर डालता हो इस नसीहत से मुस्लमानों को इधर तवज्जा दिलाई कि ख़ुशक दलीलों ही से काम न चलाया करो। बल्कि जज़बात को उभारने वाली बात भी किया करो और हिक्मत के साथ मोजज़ा हसना को भी शामिल रखा करो। हसना का लफ़्ज़ रख कर बता दिया कि झूठी ग़ैरतें न दिलाओ जैसा कि आजकल के जाहिल उल्मा लोगों को बिला-वजह रास्तबाज़ों के ख़िलाफ़ भड़काते हैं।

جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ कह कर यह बताया है कि उनसे झगड़ा करते वक़्त यह भी मद्द-ए-नज़र रखा करो कि मुख़्तलिफ़ दलायल में से जो सबसे आला और मज़बूत दलील हो, उस को बतौर बुनियाद और मर्कज़ के क़ायम किया करो और बाक़ी दलायल को इसके अधीन क्योंकि ताईद या दलील के टूट जाने से असल दलील को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। विपरीत इसके कि अगर मर्कज़ी नुक़्ता कमज़ोर हो तो मज़बूत ताईदी दलायल भी कोई ज़्यादा फ़ायदा नहीं देते। اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ م में बतलाया है कि तुम अच्छी तरह से तब्लीग़ करते रहो लेकिन अगर लोग न मानें तो इस से यह नतीजा निकाल कर मायूस न हो जाना कि हमें तब्लीग़ करनी ही नहीं आती क्योंकि बहुत मुम्किन है कि तुम्हारी तब्लीग़ में कोई नुक़्स न हो मगर मुख़ातब के दिल पर उस के गुनाहों का ऐसा ज़ंग हो कि ख़ुदा तआला उसके लिए हिदायत की खिड़की न खोले।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 273मुद्रित क़ादियान 2010 ई.)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 17 November 2022 Issue No. 46

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَ عَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

خدا کے فضل اور رحم کے ساتھ

ھوالنّاصر

واجعل لي من لدنك سلطانا نصيرا
انا فتحنا لك فتحا مبينا
ولقد نصركم الله ببدر وانتم اذلة
امام جماعت احمدیہ

اسلام آباد یوکے
MA 16-10-2021

प्यारे मेंबरान मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत को अपना सालाना इज्तेमा आयोजित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। मुझसे इस अवसर पर संदेश भिजवाने का निवेदन किया गया है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला इसे हर लिहाज़ से सफ़ल और बाबरकत करे और ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल पर इसके नेक परिणाम प्रदर्शित करे। आमीन

याद रखें कि एक विशेष वातावरण में केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए इकट्ठा होना, अल्लाह तआला को याद करने के लिए इकट्ठा होना, उस के क़ुर्ब (सानिध्य) की प्राप्ति के लिए इकट्ठा होना निस्संदेह अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को खींचता है। ऐसे अवसरों पर सम्मिलित होने वालों को चाहिए कि जो नेक बातें सुनें उन पर अमल भी करें। नेकी (शुभ कर्मों) और तक़्वा (संयम) को अपनी पहचान बनाएँ। दीन (धर्म) को दुनिया पर प्राथमिक रखें और ख़िलाफ़त से संबंध और निष्ठा में और अधिक उन्नति करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार जमाअत को तक़्वा (संयम) की शिक्षा दी है। आपने हमें ख़ुदा तआला के सानिध्य को प्राप्त करने के लिए तक़्वा पर चलने का उपदेश देते हुए फ़रमाया है कि तक़्वा समस्त पुराने पवित्र ग्रन्थों का निष्कर्ष है। इस बारे में आप अपने एक इल्हाम का वर्णन करते हुए बयान फ़रमाते हैं कि :

"बहुत बार ख़ुदा की ओर से इल्हाम हुआ कि तुम लोग मुत्तक़ी (संयमी) बन जाओ और तक़्वा की बारीक राहों पर चलो तो ख़ुदा तुम्हारे साथ होगा।" फ़रमाया: "इस से मेरे हृदय में अत्यंत पीड़ा उत्पन्न होती है कि मैं क्या करूँ कि हमारी जमाअत सच्चा संयम और पवित्रता अपना ले।" फिर फ़रमाया कि: "मैं इतनी दुआ करता हूँ कि दुआ करते करते कमज़ोरी हो जाती है और कई बार बेहोशी और मरने तक नौबत पहुंच जाती है।" फ़रमाया "जब तक कोई जमाअत ख़ुदा तआला की निगाह में मुत्तक़ी न बन जाए ख़ुदा तआला की सहायता उसके साथ नहीं हो सकती।" फ़रमाया: "तक़्वा निष्कर्ष है समस्त पुराने पवित्र ग्रन्थों और तौरेत और इंजील की शिक्षाओं का। पवित्र क़ुरआन ने एक ही शब्द (अर्थात तक़्वा के शब्द) में ख़ुदा तआला की महान इच्छा और पूर्ण प्रसन्नता का प्रकटन कर दिया है"। फ़रमाया: "मैं इस चिंता में भी हूँ कि अपनी जमाअत में से सच्चे मुत्तक़ियों, दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वालों और दुनिया को पीछे छोड़ कर अल्लाह की ओर जाने वालों को अलग करूँ और कुछ धार्मिक कार्य उनके सपुर्द करूँ और फिर मैं दुनिया के दुख तथा पीड़ाओं में ग्रस्त रहने वालों और रात-दिन भौतिक दुनिया ही की इच्छा में जान खपाने वालों की कुछ भी परवाह न करूँगा।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द प्रथम, पृष्ठ 303)

अतः यह पीड़ा है आपकी कि मेरी जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति ऐसा हो जो तक़्वा पर चलने वाला हो, न यह कि केवल दुनिया का दुख ही उसे हर समय खाता रहे।

यह भी याद रखें कि हमारे इज्तिमाओं का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य ख़िलाफ़त की बरकतों का वर्णन करना और जमाअत के लोगों के दिलों में ख़िलाफ़त से संबंध और वफ़ा को और अधिक उजागर और मज़बूती से स्थापित करने का प्रयास करना है। ख़िलाफ़त निस्संदेह अल्लाह तआला की ओर से एक महान इनाम है जो अंतिम युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्यारी जमाअत को मिला है। इसलिए हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि अल्लाह की इस रस्सी को मज़बूती के साथ थाम लें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं :

"तुम ख़ूब याद रखो कि तुम्हारी तरक़्क़ियाँ ख़िलाफ़त के साथ संबंधित हैं और जिस दिन तुमने इस को न समझा और इसे क़ायम न रखा वही दिन तुम्हारी मृत्यु और विनाश का दिन होगा लेकिन यदि तुम इस की वास्तविकता को समझते रहोगे और इसे क़ायम रखोगे तो फिर यदि सारी दुनिया मिलकर भी तुम्हारा विनाश करना चाहेगी तो नहीं कर सकेगी।"

अल्लाह तआला आपको इस इज्तिमा से भरपूर लाभ प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे और आप में से हर एक को उन समस्त बरकतों को समेटने वाला बनाए जो इस इज्तिमा से संबंधित हैं और हम सब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उन दुआओं के वारिस बनें जो आप ने ऐसी बाबरकत मज्लिसों में सम्मिलित होने वालों के लिए और अपनी जमाअत के लोगों के लिए कीं हैं।

वस्सलाम
ख़ाकसार
मिर्ज़ा मसरूर अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुक़मान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

اب دیکھئے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad